

## मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में पेशेवर सामाजिक कार्य की भूमिका

डॉ. ए. एन. कर्डीले

असिस्टेंट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, नांदेड, महाराष्ट्र, भारत

### सारांश

21 वीं सदी में चिंतायुक्त लोगों का प्रमाण बढ़ने से मानसिक स्वास्थ्य का प्रश्न अधिक जटिल होने लगा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अवसाद विश्व भर में दूसरे सबसे बड़े रोगभार का कारण है। इसकी गंभीरता को देखकर व्यक्ति की समस्या का हल धुंधला अनिवार्य बनता है। इसलिए पेशेवर समाज कार्य जो लोगों को उनकी प्रतिदिन की सामाजिक समस्याओं का हल खोजने में सहायता प्रदान करना लगता है। वर्तमान में समाज कार्य की अवधारणा में व्यापक पैमाने पर परिवर्तन आया है। अब केवल दया-परोपकार की भावना तक ही सिमित नहीं है। समाज कार्य में एक चिकित्सकीय समाजकार्य नामक शाखा है, जो उन सामाजिक, शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर केन्द्रित है। मानसिक रोग के बारे में अस्पष्टता के कारण नैदानिक असमंजस निर्माण होता है। ऐसी स्थिति में रोगी को आधार देकर उसका उसके समाज में पुनर्वसन करना महत्वपूर्ण होता है। इस कारण ही स्वास्थ्य क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण और लंबे समय तक अनदेखा प्रश्न समाज के सामने लाना और मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्र में पेशेवर समाज कार्य की भूमिका प्रगट करणे का प्रयास इस लेख में किया है।

**मूल शब्द:** मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक कार्य, पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता

### प्रस्तावना

स्वास्थ्य देश के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार "रोग इस दुर्बलता का उपचार शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तरीकों से अच्छी तरह से किया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य को परिभाषित करने में यह कहा जा सकता है कि इससे, एक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का पता चलता है, यह आत्मविश्वास आता है कि वे जीवन के तनाव के साथ सामना कर सकते हैं, उत्पादकता काम और अपने या अपने समुदाय के लिए योगदान करने में सक्षम हो सकते हैं।" लगातार बदलती जा रही जीवनशैली ने न सिर्फ लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है, बल्कि मानसिक तौर पर भी काफी क्षति पहुंचाई है। मानसिक रोगियों को शारीरिक रोगियों की तुलना में अधिक देखभाल और सहानुभूति की जरूरत होती है, लेकिन होता हमेशा इसका उल्टा है। लोग मानसिक रोग और इसके पीड़ितों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इसी कारण मानसिक रोग से पीड़ित लोग भी इस समस्या को छुपाते हैं और मानसिक रोगों के लक्षण नजर आने पर भी लोग इस बारे में खुलकर बात नहीं करते। यहाँ तक कि वे डॉक्टर के पास जाने से कतराते हैं।

आजकल स्मृति का कमजोर हो जाना, भय लगना, अवसाद आदि शिकायतें आम होती जा रही हैं। कहीं न कहीं ये मानसिक बीमारी के लक्षण भी हो सकते हैं। जानकारी के अभाव या सुस्त रवैये के कारण अक्सर लोग मानसिक रोगों को पहचान नहीं पाते, या फिर उन्हें गंभीरता से नहीं लेते। जिस कारण भविष्य में ये गंभीर रूप लेते हैं। मानसिक रोगों से बचाव के लिए इनको समय से पहचाना बेहद जरूरी है। मानसिक स्वास्थ्य हमारी भावनाओं की

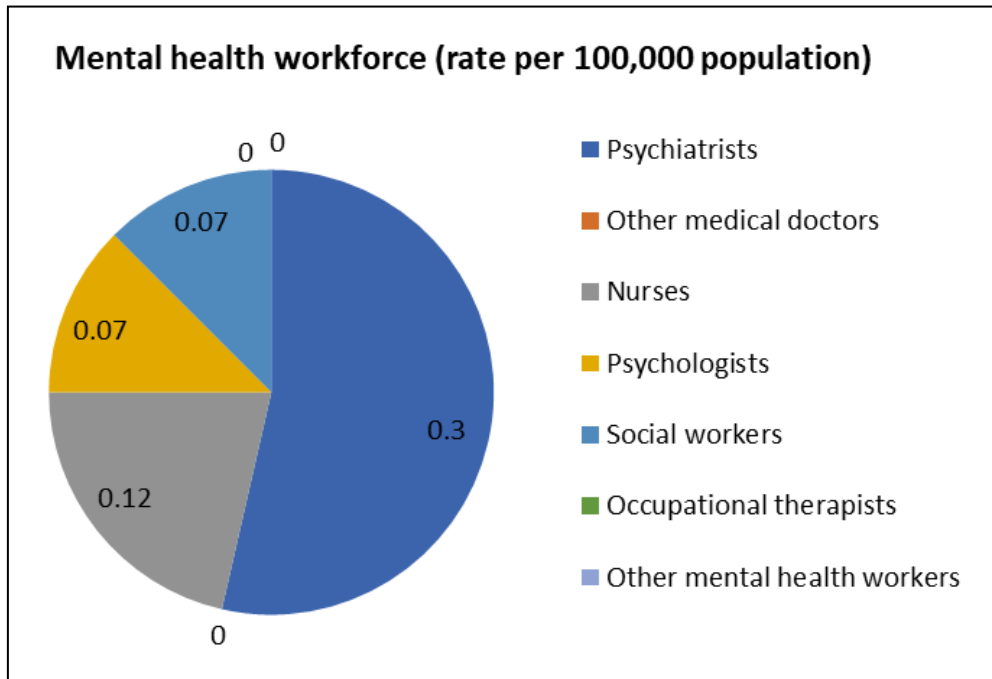
अभिव्यक्ति है और मांग की विस्तृत श्रृंखला के लिए एक सफल अनुकूलन का प्रतीक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन, मानसिक स्वास्थ्य को परिभाषित करते हुए कहता है कि यह "सलामती की एक ऐसी स्थिति है जिसमें किसी व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का एहसास रहता है, वह जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है, लाभकारी और उपयोगी रूप से काम कर सकता है और अपने समाज के प्रति योगदान करने में सक्षम होता है।" विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2001 में विश्व की मानसिक स्वास्थ्य समस्या को इंगित करते हुए "नो हेल्थ विदाउट मेन्टल हेल्थ" यह अहवाल प्रकाशित किया। इसके अनुसार यह प्रश्न अब रास्ते पे घुमनेवाले कुछ मानसिक रोगी तक ही सीमित न रहकर समाज के सभी लोगों के जीवन के साथ जुड़ा है। उसका महत्व यह रिपोर्ट बताता है।

### मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति

मरे और लोपेज (1996) के अनुसार, विश्व में 45 करोड़ से भी अधिक लोग मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2020 तक अवसाद विश्व भर में दूसरे सबसे बड़े रोगभार का कारण होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2001 में प्रकाशित हुए रिपोर्ट के अनुसार पुरी जनसंख्या के लगभग 10 प्रतिशत लोग मानसिक स्वास्थ्य की समस्या से परेशान थे तो यह आंकड़ा 2010 में 15 प्रतिशत होने की संभावना जताई थी। मानसिक स्वास्थ्य की यह स्थिति देखकर विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहायता से 2008 में मेन्टल हेल्थ गैप अॅक्शन प्रोग्राम की शुरुवात कर दी गई। इस प्रोग्राम से कम और मध्यम उत्पन्न वाले लोगों को मानसिक स्वास्थ्य की सेवाएँ दी गईं।

भारत देश में पुरी जनसंख्या के लगभग 6.7 प्रतिशत लोग मानसिक स्वास्थ्य की समस्या से परेशान हैं। उसमें से 2 प्रतिशत लोग का तीव्र स्वरूप की मानसिक स्वास्थ्य समस्या का सामना कर रहे हैं। इस तरह 4 से 16 वर्ष के 12 प्रतिशत बच्चों में मनोविकार के लक्षण दिखते हैं। मानसिक स्वास्थ्य की सुविधाएँ के बारे में भारत देश बहुत ही पिछे है। विश्व स्वास्थ्य संघटन के अनुसार भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर किए जानेवाला खर्च पुरी स्वास्थ्य सेवा पर होनेवाले खर्च के 01 प्रतिशत (0.06 प्रतिशत) से भी कम

है, जो बाकी देशों (10, 12, 18 प्रतिशत) के तुलना में बहुत ही कम है। पुरे भारत में सिर्फ 3500 मनोरोग चिकित्सक हैं जिसका अनुपात 1 लाख जनसंख्या के लिए 03 ही है। जो कि बाकी देशों (ऑस्ट्रेलिया 100, अन्य विकसीत देश 150) की तुलना में कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2014 में मानसिक स्वास्थ्य अटलस प्रदर्शित किया। इसके अनुसार भारत में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत व्यावसायिक कर्मचारी निम्न में दिए हैं।



ग्राफ 1: मनोचिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारी : भारत

स्रोत: डब्ल्यू. एच. ओ., मेन्टल हेल्थ अटलस कन्ट्री प्रोफाइल: इंडिया 2014

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत व्यावसायिक कर्मचारियों में दर एक लाख जनसंख्या को 0.30 प्रतिशत मनोचिकित्सक, 0.12 प्रतिशत नर्स, 0.07 प्रतिशत मनोवैज्ञानिक, 0.07 प्रतिशत व्यावसायिक समाजिक कार्यकर्ते हैं।

महाराष्ट्र में मानसिक स्वास्थ्य से लगभग 1 कोटी लोग पीडित हैं इसमें 15-45 इस गट की ज्यादा संख्या है। महाराष्ट्र में इस स्थिति में मानसिक स्वास्थ्य के पुणे, ठाणे, नागपूर और रत्नागिरी इस जगह पर मानसिक स्वास्थ्य के अस्पताल हैं जिसकी क्षमता 5555 मनोरोग बेड की क्षमता है। इसके अलावा हर जिले में दस बेड का मनोचिकित्सा दालन सुरु किया है।

## मानसिक रोगों के कारण

मानसिक रोगों के मुख्य कारण निम्न प्रकार के हैं।

### 1. आनुवंशिक कारण

साइकोसिस, व्यक्तित्व रोग, मदिरापान, मंदबुद्धि होना, मिर्गी आदि रोग उन लोगों में ज्यादा मिलते हैं, जिनके परिवार में इसका कोई इतिहास हो, उनकी संतान को इनका खतरा सामान्य लोगों की अपेक्षा लगभग दोगुना हो जाता है।

### 2. व्यक्तित्व

अपने में खोये रहने वाले, चुप रहने वाले, कम दोस्ती करने वाले लोगों में स्कीजॉफ्रीनिया अधिक होती है तथा सफाई पसंत, समयनिष्ठ, मितव्ययी जैसे गुणों वाले लोगों में बाध्य विक्षिप्त अधिक होता है।

### 3. खान-पान से जुड़े कारण

कुछ दवाओं, रासायनिक तत्वों, धातुओं, शराब व अन्य नशीले पदार्थों आदि का सेवन मनोरोगों के होते का कारण बन सकते हैं।

### 4. मनोवैज्ञानिक कारण

आपसी संबंधों में तनाव? किसी प्रिय व्यक्ति का गुजाराना, सन्मान को ठेस लगना, काम में भारी नुकसान, शादी, तलाक या प्यार में असफलता आदि मनोरोगों के कारण बन सकते हैं।

### मानसिक रोगों के लक्षण

मानसिक रोगों के मुख्य लक्षण निम्न प्रकार के होते हैं।

- समाजिक लोगों से कटाव और अलग रहना।
- कामकाज में असामान्यता।

- एकाग्रता में समस्या या समझने में मुश्किल होना।
- याददाश्त कमजोर होना।
- किसी भी गतिविधि में भाग लेने के लिए इच्छा की कमी, या उदासिनता।
- अपने आप से ही कट-कटा महसूस करना।
- डर या दूसरों के प्रति शककीपन।
- हमेशा नर्वस महसूस करना।
- अस्वाभाविक और अजीब व्यवहार।
- नाटकीय नींद और व्यक्तीगत स्वच्छता में कमी।
- भावनाओं या मिजाज में तेजी से या नाटकीय परिवर्तन होना।

मानसिक रोगों से छुटकारा पाना उतना आसान नहीं होता जितना प्रतीत होता है। अधिकांश मानसिक रोग मस्तिष्क में आये बदलाव या रासायनिक असंतुलन के कारण होते हैं। इसलिए परिवार के साथ और डॉक्टरों की मदद की जरूरत होती है। किसी भी मानसिक प्रक्रिया या प्रतिक्रिया को परावर्तित करना उतना सरल नहीं होता जितना लोग इसे समझते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य को सातत्य के रूप में देखा जा सकता है जहाँ एक व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के कई विभिन्न संभावित मूल्य हो सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य को आम तौर पर एक सकारात्मक गुण के रूप में देखा जाता है। मनोरोग किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की वह स्थिति होती है, जिसकी तुलना किसी स्वस्थ व्यक्ति से करने पर वह सामान्य नहीं होती। स्वस्थ व्यक्तियों की तुलना में मनोरोगों से ग्रस्त किसी व्यक्ति का व्यवहार असामान्य होता मनोरोग मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन होने के कारण होते हैं, तथा इनके उपचार के लिए मनोरोग चिकित्सा की आवश्यकता होती है।

### मानसिक स्वास्थ्य और पेशेवर समाज कार्य

समाज कार्य का अर्थ लोगों को उनकी प्रतिदिन की सामाजिक समस्याओं का हल खोजने में सहायता प्रदान करना लगता है। वर्तमान में समाज कार्य की अवधारणा में बहुत ही व्यापक पैमाने पर परिवर्तन आया है। यह कार्य अब केवल दया या परोपकार की भावना तक ही नहीं सिमित है। बल्कि रोजगार के रूप में भी युवाओं को बहुत आकर्षित कर रहा है। जिन छात्रों की रुचि कैरियर के साथ साथ समाजसेवा में भी है।

समाज कार्य की छः प्रणालियाँ हैं जिनका उपयोग करते हुए लोगों की सहायता की जाती है, इन्हे दों भागों में विभाजित किया जाता है। प्राथमिक प्रणाली में वैयक्तिक समाज कार्य, सामूहिक समाज कार्य तथा सामुदायिक संगठन, जबकि दूसरी प्रणाली में समाज कल्याण प्रशासन, समाज कार्य संशोधन तथा सामाजिक क्रिया को रखा गया है। समाज कार्य के कुछ क्षेत्र भी चुने गए हैं, जिसमें पारिवारिक कल्याण, कामगारों का कल्याण, समुदाय विकास, अपराध सुधारक क्षेत्र और मनोचिकित्सा समाज कार्य ये महत्वपूर्ण हैं।

### मनोचिकित्सा समाज कार्य

चिकित्सकीय समाजकार्य, समाजकार्य की एक नव विकसित शाखा है, जो उन सामाजिक, शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर

केन्द्रित जो बीमार की बीमारी से संबंधित है। यह समाजकार्य का एक उपविषय है। स्वास्थ्य का विकास, रोग निवारण एवं उपचार के क्षेत्र में समाज कार्य की प्रणालियों व तकनीकों के उपयोग को ही चिकित्सकीय समाज कार्य की संज्ञा दी जाती है। मानव समाज निरंतर हो रहे परिवर्तन, औद्योगिकरण, नगरीकरण के फलस्वरूप संयुक्त परिवार के स्वरूप में परिवर्तन तथा दिन प्रतिदिन कि सामाजिक आर्थिक जटीलताओं के कारण व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत व पारिवारिक व्यवस्तता के कारण रोगियों व रोज के फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाली मनो सामाजिक समस्याओं के निवारण और निराकरण में चिकित्सकीय समाज कार्य की उपयोगिता एवं मान्यता में वृद्धि हुई है। चिकित्सा समाजकार्यकर्ता प्रायः किसी अस्पताल में कार्य करते हैं, वे रोगियों और उनके परिवार के लोगों को मनोसामाजिक सहायता करते हैं जिन इनकी आवश्यकता होती है।

मनोचिकित्सा विज्ञान में जो विकास हुआ उसका प्रभाव समाज कार्य प्रणालियों पर पड़ा है, इन विचारों के प्रभाव से समाजकार्य की रुचि आर्थिक एवं सामाजिक कारकों से हटकर सेवार्थी की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का और केन्द्रित हुई और उसकी प्रतिक्रियाओं एवं मनोवृत्तियाओं को आधिक महत्व या जाने लगा। विशेष रूप से फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत ने सामाजिक वैयक्तिक समाज कार्य को प्रभावित किया।

नॅशनल असोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर ने 1958 में समाजकार्य शिक्षा हेतु स्वास्थ्य क्षेत्र की उन संस्थाओं को सूची बद्ध किया, जिनमें चिकित्सकीय समाजकार्य प्रदत्त सेवाओं को आधिक उपयोगी बनाने के लिए स्वीकार किया जाता है।

1. निजी एवं सार्वजनिक चिकित्सालय: सामान्य चिकित्सालय, बाल चिकित्सालय, प्रसूतिगृह, कैंसर, गृह सेवा आदि।
2. निदानशाला: सामुदायिक निदानशाला, बाल स्वास्थ्य निदानशाला, विकलांग निदानशाला आदि।
3. पुनर्स्थापना इकाइयों: चिकित्सालय एवं निदान शाला केन्द्र और व्यावसायिक पुनर्स्थापना आदि।
4. सार्वजनिक स्वास्थ्य: सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ, विकलांग सेवाएँ, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य विभाग तथा अन्य स्वास्थ्य संगठन व संस्थाएँ।
5. सामुदायिक संगठन: सामुदायिक विकास व कल्याण संबंधी स्वास्थ्य कार्यक्रम समुदाय के सदस्य के रूप में व्यक्तियों के कल्याण एवं स्वास्थ्य वर्धन हेतु से है।
6. सार्वजनिक कल्याण: स्थानिय स्वास्थ्य संबंधी इकाइयों व्यक्तिगत एवं स्वास्थ्य समस्या के संबंध में प्रत्यक्ष सेवा।
7. स्वास्थ्य नीति एवं राजनीति: चिकित्सा एवं सार्वजनिक नीतियों का निर्धारण समुदाय के संदर्भ में निर्धारित किया जाता है। स्वास्थ्य नीतियों के विकास को समझने के लिए उससे संबंधित समाज में प्रचलित प्रक्रियाओं को समझना अनिवार्य है।

### मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में पेशेवर समाज कार्यकर्ता की भूमिका एवं कार्य

मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में समाज कार्य प्रणाली के अनुसार अलग अलग भूमिकाएँ निभानी पडती है। चिकित्सा क्षेत्र में समाजकार्य मुख्यतः वैयक्तिक कार्य विधि से होता है। इस विधि के माध्यम से सामाजिक कार्यकर्ता तीन स्तरों पर कार्य करता है।

प्रथम स्तर : वह रोगी के व्यक्तिगत जीवन से संबंधित शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक जानकारियों को उपलब्ध करता है। इसके पश्चात वह रोगी का व्यक्तिगत इतिवृत्त पत्र तैयार करता है।

दूसरा स्तर : रोगी के परिवार एवं समुदाय का मनोसामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन करता है।

तीसरा स्तर : इसमें अस्पताल के निसमों तथा सुविधाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके बाद ही वह रोगी को उपचार तथा मदद करता है।

### चिकित्सकीय समाज कार्यकर्ता के कार्य

चिकित्सकीय समाजकार्य व्यक्ति की महत्ता के विश्वास पर आधारित है। यह समाजकार्य की आधारभूत मान्यताओं से प्रेरित होकर, चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता उन व्यक्तियों की सहायता करता है, जो बीमारी से मुक्त होने की प्रक्रिया में सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों के अवरोधों का अनुभव करते हैं। चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता का पहला कार्य रोग ग्रस्तता के कारण उत्पन्न सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु वैयक्तिक सेवा कार्य के अभ्यास द्वारा रोगी को सहायता प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त निम्न कार्य भी महत्वपूर्ण हैं।

- सामुदायिक संगठन में सहभागिता करना।
- नीति निर्धारण एवं कार्यक्रम नियोजन में सहभागिता प्रदान करना।
- शैक्षणिक कार्यक्रम में सहभागी होना।
- समाजकार्य अनुसंधान में सहयोग देना।
- परामर्श एवं निर्देशन सेवाप्रदान करना।

### निष्कर्ष

मानसिक रोग से जुड़ी कलंक की भावना, जिसके कारण ऐसे लोगों के विरुद्ध समाज में हर पहलुओं, जैसे शिक्षा, रोजगार, विवाह आदि में भेदभाव होता है, चिकित्सा सहायता लेने में देर करने की वजह होती है। मानसिक स्वास्थ्य और रोग के बारे में अस्पष्टता के कारण नैदानिक असमंजस निर्माण होता है। ऐसी स्थिति में रोगी को आधार देकर उसका उसके समाज में पुनर्वसन करना महत्वपूर्ण होता है। और मानसिक रोग किसी पाप का प्रायश्चित्त न होकर इलाज के माध्यम से रोगी ठीक हो सकता है, यह संदेश समाज तक पहुंचाने में पेशेवर समाज कार्यकर्ता की भूमिका महत्वपूर्ण है।

### सन्दर्भ सूची

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2001), विश्व स्वास्थ्य रिपोर्ट 2001, मानसिक स्वास्थ्य : नई समझ, नई आशा
2. उप प्रधानमंत्री कार्यालय, सामाजिक बहिष्करण यूनिट: तथ्यपत्र 1: मानसिक स्वास्थ्य आधार पर कलंक और भेदभाव 2004
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2004), मानसिक स्वास्थ्य और मादक द्रव्यों के संवन विभाग की एक रिपोर्ट, जिनेवा

4. शहापूरकर, पी. एम. (2012), समाजकार्य: एक दृष्टिक्षेप, विद्याभारती प्रकाशन, लातूर
5. कर्डीले ए. एन (2016), मानसिक आरोग्य आणि व्यावसायिक समाजकार्य, यशदा, यशमंथन, पुणे
6. कुदळे (2015), युनिक बुलेटिन, शिवाजीनगर, पुणे
7. बेन्नूर व खैरनार (2015), मानवलोक रिसर्च बुलेटिन, अंबाजोगाई, जि. बीड